॥ अर्जुनकृत: श्रीदुर्गा स्तवनं ॥



महाभारत भीष्मपर्व के श्रीमद्भगवद्गीता पर्व के अंतर्गत दुर्योधन की सेना को युद्ध के लिये उपस्थित देख श्रीकृष्ण ने अर्जुन के हित के लिये इस प्रकार कहा। श्रीभगवान बोले- महाबाहो। तुम युद्ध के सम्मुख खड़े हो। पवित्र होकर शत्रुओं को पराजित करने के लिये दुर्गा देवी की स्तुति करो। संजय कहते हैं- परम बुद्धिमान भगवान वासुदेव के द्वारा रणक्षेत्र में इस प्रकार आदेश प्राप्त होने पर कुन्तीकुमार अर्जुन रथ से नीचे उतरकर दुर्गादेवी की स्तुति करने लगे।

Essence Of Astrology ने महाभारत भीष्मपर्व से वह स्तुति आपके लिए संकलित की है। अत्यंत प्रभावशाली इस विशेष स्तोत्र का विनियोग, न्यास, प्रयोग विधि आदि कल्याण मंदिर प्रकाशन प्रयाग से प्रकाशित नवरात्र कल्पतरु से संकलित किया है।

विनियोग

अस्य श्रीभगवती दुर्गा-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीकृष्णार्जुन-स्वरूपी नर-नारायणो ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, श्रीदुर्गा देवता, ह्रीं बीजं, ऐं शक्ति:, श्रीं कीलकं, मम अभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोग:

ऋष्यादिन्यास

श्रीकृष्णार्जुन-स्वरूपी-नर-नारायण-ऋषिभ्यो नम: शिरसि,

अनुष्टुप् छन्दसे नम: मुखे, श्रीदुर्गा-देवतायै नम: हृदि

ह्रीं बीजाय नम: गुह्ये, ऐं शक्तयै नम: पादयो

श्रीं कीलकाय नम: नाभौ

मम अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे

कर न्यास

ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नम:, ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्
ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम्, ह्लों कनिष्ठाभ्यां वौषट्, ह्ल: करतल करपृष्ठाभ्यां फट्

अंग-न्यास

ह्लां हृदयाय नम:, ह्लीं शिरसें स्वाहा, ह्लूं शिखायै वषट्
ह्लैं कवचायं हुम्, ह्लौं नैत्र-त्रयाय वौषट्, ह्ल: अस्त्राय फट्

ध्यान

सिंहस्था शशि-शेखरा मरकत-प्रख्या चतुर्भिर्भुजै:,
शंख चक्र-धनु: शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि: शोभिता।
आमुक्तांगद-हार-कंकण-रणत्कांची-क्वणन् नूपुरा,
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।

मानस पूजन

ह्लीं दुं दुर्गायै नम: लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।
ह्लीं दुं दुर्गायै नम: हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।
ह्लीं दुं दुर्गायै नम: यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि।
ह्लीं दुं दुर्गायै नम: रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।
ह्लीं दुं दुर्गायै नम: वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।
ह्लीं दुं दुर्गायै नम: सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि।

मूल स्तोत्र पाठ

श्रीअर्जुन उवाच -

नमस्ते सिद्धसेनानि आर्ये मन्दरवासिनि ।
कुमारि कालि कापालि कपिले कृष्ण-पिंगले ॥१॥
भद्रकालि नमस्तुभ्यम् महाकालि नमोस्तुते ।
चंडिचंडे नमस्तुभ्यम् तारिणि वरवर्णिनि ॥२॥
कात्यायनि महाभागे करालि विजये जये ।
शिखिपिच्छ-ध्वज-धरे नाना-भरण-भूषिते ॥३॥
अट्टशूल-प्रहरणे खड्गखेटधारिणि ।
गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्टे नन्दगोप-कुलोद्भवे ॥४॥
महिषासृक्प्रिये नित्यं कौशिकि पीतवासिनि ।
अट्टहासे कोकमुखे नमस्तेऽस्तु रणप्रिये ॥५॥
उमे शाकम्बरी श्वेते कृष्णे कैटभनाशिनि ।
हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राक्षि नमोऽस्तु ते ॥६॥
वेदश्रुति महापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि ।

जम्बूकटकचैत्येषु नित्यम् सन्निहितालये ॥७॥

त्वं ब्रह्म-विद्या-विद्यानां महानिद्रा च देहिनाम् ।

स्कन्दमातर्भगवति दुर्गे कान्तारवासिनि ॥८॥

स्वाहाकारः स्वधा चैव कला काष्ठा सरस्वती ।

सावित्री वेदमाता च तथा वेदान्त उच्यते ॥९॥

स्तुतासि त्वं महादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना ।

जयो भवतु मे नित्यं त्वत्प्रसादाद्रणाजिरे ॥१०॥

कान्तारभयदुर्गेषु भक्तानां चालयेषु च ।

नित्यं वससि पाताले युद्धे जयसि दानवान् ॥११॥

त्वं जम्भनी मोहिनी च माया ह्रीः श्रीस्तथैव च ।

संध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा ॥१२॥

तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चन्द्रादित्य-विवर्धिनी ।

भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥१३॥

॥ फल-श्रुति ॥

यः इदं पठते स्तोत्रं, कल्यं उत्थाय मानवः।

यक्ष-रक्ष: पिशाचेभ्यो, न भयं विद्यते सदा ॥१४॥

न चापि रिपवस्तेभ्य:, सर्पाद्या ये च दंष्ट्रिण:।

न भयं विद्यते तस्य, सदा राज-कुलादपि ॥१५॥

विवादे जयमाप्नोति, बद्धो मुच्येत बन्धनात्।

दुर्गं तरति चावश्यं, तथा चोरैर्विमुच्यते ॥१६॥

संग्रामे विजयेन्नित्यं, लक्ष्मीं प्राप्नोति केवलाम्।

आरोग्य-बल-सम्पन्नो, जीवेद् वर्ष-शतं तथा ॥१७॥

जो मनुष्य सबेरे उठकर इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे यक्ष, राक्षस और पिशाचों से कभी भय नहीं होता। शत्रु तथा सर्प आदि विषैले दाँतों वाले जीव भी उनको कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। राजकुल से भी उन्हें कोई भय नहीं होता है। इसका पाठ करने से विवाद में विजय प्राप्त होती है और बंदी बन्धन से मुक्त हो जाता है। वह दुर्गम संकट से अवश्य पार हो जाता है। चोर भी उसे छोड़ देते हैं। वह संग्राम में सदा विजयी होता और विशुद्ध लक्ष्मी प्राप्त करता है। इतना ही नहीं, इसका पाठ करने वाला पुरुष आरोग्य और बल से सम्पन्न हो सौ वर्षों की आयु तक जीवित रहता है।

प्रयोग विधि

स्तोत्र का पाठ भगवती के मंदिर में अथवा घर के एकान्त कक्ष में करनी चाहिए। नवरात्र में स्थापित कलश के पास इसका पाठ करें। माँ भगवती के चित्र के सामने घी / तिलतेल का दीपक जला लें। घी / तेल शुद्ध हो, मिलावटी वाला न हो। बत्ती के लिए अपनी नाप के बराबर रूई के सूत को 05 बार मोड़कर बटे तथा बटी हुई बत्ती को कुंकुम में रगें। लाल वस्त्र पहनें तथा लाल आसान पर बैठकर स्तोत्र पाठ करें। पाठ के बाद अंतिम दिन हवन करें। जितने दिन पाठ हो ब्रह्मचर्य का पालन करें।

पाठ संख्या : 09 या 21 दिन प्रतिदिन 09 या 21 पाठ

इस प्रकार स्तोत्र पाठ करने सेराहु महादशा / अन्तर्दशा / प्रत्यन्तर्दशा / गोचर के अशुभ प्रभाव निश्चित ही दूर होते हैं, सभी बाधाएं समाप्त होती हैं, दरिद्रता का नाश होता है। शासकीय संकट, शत्रु बाधा की समाप्ति होती है। राजभय, समाप्त होता है।